UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 10, अंक : 2, दिसंबर 2022

सुगम संगीत बनाम् पाश्चात्य संगीतः प्रभाव एवं परिवर्तन

अमित कुमार शर्मा

पूर्व प्रवक्ता, संगीत विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

Paper received on : August 28, October 04, Accepted on October 17, 2022

सार-संक्षेप

सुगम संगीत का अपना विशिष्ट स्थान है। सुगम संगीत इतिहास भी अत्यंत गौरवशाली है। भारतीय शास्त्रीय संगीत ही सुगम संगीत की जननी है तथा सबसे ज्यादा सुना और समझा जाने वाला संगीत सुगम संगीत ही है। लेकिन आजकल की भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में सुगम संगीत का रूप तीव्र गति से बदल रहा है। संगीत साधक का ध्यान साधना पर ना होकर के साध्य पर केन्द्रित हो गया है या यूँ कहे कि अत्यधिक वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग तथा दूसरे अन्य नव प्रयोगों से सुगम संगीत अपनी गरिमा या मूल ढाँचा से इतर होता चला जा रहा है। आधुनिक युग में समूचि संस्कृति बदलाव की तरफ है, जिससे संगीत भी अछूता नहीं है। हम देख रहे हैं कि प्रतिस्पर्धा की उहापोह में धीरे-धीरे संगीत अपनी गौरवमयी परंपरा, रंजकता, सुरीलेपन तथा साधना से दूर होता जा रहा है। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए विषय एवं अतीत की शोध संभावनाओं को विस्तार से सुझाया गया है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र का उद्देश्य नव आगंतुक शोधार्थियों को नया शोध आधार तथा दृष्टिकोण प्रदान करना है, ताकि निकट भविष्य में सुगम संगीत पर पड़ रहे पाश्चात्य प्रभाव पर चिंतन किया जा सके तथा साथ में यह भी सोचा जा सके कि आनेवाले समय में इस प्रकार के प्रभाव सुगम संगीत के लिए कितने अनुकूल या प्रतिकूल होंगे। इस शोध पप्रत्र का एक उद्देश्य यह भी है कि आधुनिक सुगम संगीत पर हो रहे वैज्ञानिक प्रयोग तथा उनकी संभावनाओं से संगीत जगत को अवगत कराया जा सके। प्रस्तुत शोध-पत्र को लिखने के लिए माध्यमिक स्रोतों को माध्यम बनाया गया है।

मुख्य शब्द : संगीत, संस्कृति, सुगम संगीत, पाश्चात्य प्रभाव।

शोध-पत्र

सुगम संगीत वह संगीत है जो सर्वसाधारण के लिए रुचिकर होता है। इसमें शास्त्रों की कोई नियमबद्धता अनिवार्य नहीं होती। कहने का भाव यह है कि कोई शास्त्र अनिवार्य रूप से सुगम संगीत पर थोंपा नहीं जा सकता। यह वह संगीत हैं जिसे गायक सुगमतापूर्वक गा सकता है, किंतु उसको एक निश्चित अभ्यास की जरूरत होती है। देश भेद से सुगम संगीत के अंतर्गत–भजन-कीर्तन, गीत, कव्वाली व भाव संगीत तथा ग़ज़ल आदि आते हैं। जिस संगीत में शास्त्रबद्धता न हो उसे सुगम संगीत कहा जा सकता है। इस संगीत में स्वर से अधिक पद है और भाव को प्रधानता दी जाती है। मन की किसी विशेष अवस्था, चाहे वह भक्ति हो, चाहे शोक, चाहे प्रेम, चाहे वात्सल्य और चाहे वैराग अन्तर के अन्तःस्थल से जो भी शब्द स्वरों के सहारे स्फूट हो वह सरल संगीत या भाव संगीत है। अंग्रेजी में 'Light Musicl के पर्यायवाची के रूप में सुगम संगीत का उपयोग किया जाता है। कुछ लोग फिल्म संगीत को भी सुगम संगीत के अंतर्गत मानते हैं परंतु सरल संगीत की यह संकीर्ण परिभाषा होगी।

सुगम संगीत एक ऐसी विधा है, जिसके लिए 'गागर में सागर' कहावत चरितार्थ होती है। सुगम संगीत का अर्थ है, जो सुलभ अर्थात् सरलता से जिसे सीखा, गाया व समझा जा सके। ''साधारणतः रागदारी संगीत को छोड़कर शेष हर प्रकार के गाने को सुगम संगीत कहा जाता है।''[1]

संगीत के क्षेत्र में बहुत वर्षों पहले शास्त्रीय व सुगम संगीत के बीच एक विभेदक रेखा खींच दी गई हैं उसका नामकरण मार्गी और देशी संगीत किया गया था। शास्त्रीय संगीत का मानदण्ड निश्चित किया हुआ है और उनके नियमों के आधार पर जो गायन होता है वह शास्त्रीय संगीत कहलाता है परंतु जो गाना इस शास्त्रीय संगीत से हटकर प्रस्तुत किया जाता है वह सुगम, देशी या लोक संगीत से अभिहित किया जाता है।

लोक संगीत की जीवंतता ने इन दोनों शैलियों को प्रभावित किया। सुगम संगीत, लोक संगीत के अधिक नजदीक है। नवरस की अभिव्यक्ति सुगमता से करना सुगम संगीत का मुख्य ध्येय है। सरल कविता को सरल स्वर-समूह में आबद्ध किया जाता है, ताकि संगीत को न समझने वाला व्यक्ति भी लय-स्वर-तालबद्ध भावुकता में डुबकी लगाकर आनंद प्राप्त कर सके।

सुगम संगीत पिछले दो एक दशकों से बहुत समृद्ध और सौंदर्य सम्पन्न हुआ है। इसकी लोकप्रियता में भी आशातीत वृद्धि हुई हैं। शास्त्रीय संगीत को जहाँ अनेक उस्तादों, शिक्षण संस्थानों और सरकारी संरक्षण द्वारा उर्वर और उन्नत बनाने का यत्न किया गया है, वहाँ सुगम संगीत बिना

ऐसे किसी प्रत्यक्ष सहायक के स्वतः ही ऊँचाईयों की ओर उन्मुख हुआ जा रहा है। यही इसकी जीवन्तता, सघनता और सम्पन्नता का उदाहरण प्रस्तुत करने में यथेष्ट है। इसका श्रोता वर्ग भी संख्या की दृष्टि से पर्याप्त प्रमाण में बढ़ा है। शास्त्रीय संगीत को समझने वाले श्रोताओं की अपेक्षा सुगम संगीत के श्रोताओं की संख्या अधिक है ऐसा माना जा सकता है। यह कहना असमीचीन नहीं होगा कि अपने रास्ते में आई विभिन्न बाधाओं और असीम परिस्थितियों के बावजूद सुगम संगीत की धारा ने आज अपना नया धरातल और तराशा है।

सुगम संगीत का दूसरा महत्त्वपूर्ण घटक इसकी 'धुन' है। धुन रागाश्रित हो भी सकती है और नहीं भी। किन्तु मुख्य विशेषता इस धुन की यह होती है कि यह संक्षिप्त होती है, हृदयग्राही और सहज समझ में आने वाली होती है। सधे गले द्वारा उच्चारित काव्यमयी स्वर लहरियाँ इच्छित प्रभाव की संतुष्टि करने में समर्थ होती है और यही इसके प्रचार में सहयोगी है।

इसमें स्वर विस्तार की गुंजाईश कम रहती हैं, गायक अपने कथ्य को सीधी-सीधी आवाज में गाकर श्रोताओं के सम्मुख रख देता है। सुगम संगीत यदि किसी मधुर स्वरावली में प्रस्तुत किया जा रहा हो, चाहे वे स्वर किसी कंठ अथवा वाद्य से निकले, सभी प्रकार के श्रोताओं को आनंद प्रदान करने में सक्षम होता है। यदि शास्त्रीय संगीत मस्तिष्क की उपज है, तो सुगम हृदय की। [2]

सुगम संगीत का स्वरूप हल्का-फुल्का होता है और इसका उद्देश्य मनोरंजन करना है। संगीत यहाँ आत्मा की खोज के लिए है। जिस प्रकार आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से माना जाता है उसी प्रकार स्वर का सम्बन्ध भी आत्मा परमात्मा से है। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि प्रकृति के कण-कण में संगीत तत्त्व निहित है स्वर आत्मा का 'नाद' है और आत्मा परमात्मा का स्वरूप।

संगीत मानव का चिरसंगी है। यह एक ऐसी भाषा है जिसका उपयोग आदिकाल से अनन्त काल तक होता रहेगा। इसने समय के अनेक थपेड़े तथा उतार-चढ़ाव सहे हैं जिनका प्रभाव इस पर पड़ा है। इसलिए तो अब 'मार्गी संगीत' नाम मात्र रह गया है। जाति गायन समाप्त हो गया है। ध्रुपद शैली तथा उसकी कुछ वाणियाँ लुप्त हो गई और अब शेष रहा साधारण जनता का संगीत और एक विशिष्ट वर्ग का संगीत। प्रथम प्रकार के संगीत में लोकसंगीत, भाव संगीत तथा फिल्म, संगीत और दूसरे प्रकार में शास्त्रीय अथवा उपशास्त्रीय संगीत आता है। [3]

प्राचीन काल से ही मानव की प्रवृत्ति सौंदर्य की तरफ रही है। प्रारम्भ से ही मनुष्य का सौंदर्य और रसाभिव्यक्ति की तरफ विशेष लगाव रहा है। इस बात के प्रमाण भारतीय धर्म ग्रंथों, वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों, स्मृतियों एवं ऐतिहासिक ग्रंथों में प्रचुर मात्रा में मिलते है। रामायण और महाभारत के काल से लेकर, मुगल काल और मुसलमान काल तक भी राजा-महाराजा, भोग-विलास के लिए संगीत का सहारा लेते थे। मदिरा पान करते हुए संगीत सुनना उनकी आदत बन गई थी। जो उनकी रसिकता साबित करती थी।

अगर ध्यान से देखें तो कहीं न कहीं चित्रपट और संगीत का उपयोग मनुष्य के जीवन में मात्र मनोरंजन ही है। ऐसा मगर हम कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वर्तमान युग विज्ञान का युग है, विज्ञान एक वरदान है तो अभिशाप भी। चूँकि चित्रपटों का निर्माण भी विज्ञान के बगैर सम्भव नहीं था लेकिन वर्तमान वैज्ञानिक क्रांति और प्रोद्योगिकरण से भारतीय चित्रपट एवं संगीत पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है।

भारतीय सुंगम संगीत पर पाश्चात्य प्रभाव वैसे तो काफी समय पहले से ही देखें जा रहे हैं लेकिन वर्तमान समय में ये प्रभाव कुछ ज्यादा ही देखने को मिल रहे है। सुगम संगीत ही नहीं अपितु पाश्चात्य प्रभाव भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता पर भी पड़ते जा रहे हैं। खानपान, पहनावा, रहन-सहन, शिक्षा, बोलचाल आदि यह एक तरह से भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य प्रभाव देखे जा सकते हैं और इस प्रकार भारतीय संस्कृति शुद्ध भारतीय न रह कर एंगलों या मिश्रित संस्कृति बनती जा रही है।

वर्तमान सुगम संगीत का अगर हम ध्यानपूर्वक अध्ययन करें तो हमें यह ज्ञात होता है कि सुगम संगीत के हर पक्ष पर पाश्चात्य प्रभाव पड़े हैं चाहे वो ताल एवं लय हो, वाद्य पक्ष या गाने के बोल या आलापचारी का ढंग।

भारतीय सुगम संगीत में लय प्रयोग की विधि वर्तमान समय में बदल चुकी है। पूर्व समय में लय एक समान, चलती थी तथा गानों को विलम्बित, मध्य विलम्बित एवं मध्य लय में जाने की परम्परा थी, लेकिन इस समय में यह चलन बदल चुका है वर्तमान समय के अधिकतर गीत मध्य या द्रुतलय में ही शुरू होते हैं। ये तो स्पष्ट हो ही चुका है कि सुगम संगीत में पाश्चात्य लय एवं ताल का प्रभाव स्पष्ट है लेकिन इसका प्रमुख कारण पाश्चात्य लय का प्रयोग है। उदाहरणार्थ ताल के किसी एक ही ठेके को पाश्चात्य ढंग से कई प्रकारों से बजाया जाता है। आजकल लय, ताल, वाद्यों से न दिखाकर पियानों एवं स्ट्रींग्स (Strings) वाद्यों, और गिटार आदि वाद्यों से भी दिखाई जाती है।

भारतीय सुगम संगीत में ताल और लय पर विशेष पाश्चात्य प्रभाव पड़ा है पुराने सुगम संगीत में लय एवं ताल के विशेष नियमों का पालन किया जाता था। लेकिन वर्तमान समय में ये सब धूमिल होता दिखाई दे रहा है। गानों में लय की एकरूपता नहीं दिखाई पड़ती कभी लय ज्यादा तो कभी कम दिखाई पड़ती है। एक ही गाने में ताल के भी अनेकों पाश्चात्य प्रकार देखने को मिलते हैं और भारतीय सुगम संगीत में–भारतीय ताल वाद्यों पर Western प्रकार खूब बजाए जाते हैं। [4]

सुगम संगीत में इस समय हम देखते हैं कि लगभग भारतीय परम्परागत वाद्यों के स्थान पर पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग होने लगा है।

गर भारतीय वाद्यों का प्रयोग भी सुगम संगीत में हो रहा है तो भी उनको प्रयोग करने/बजाने का ढंग पाश्चात्य ही हो चला है। उदाहरणार्थ तबले को भी पाश्चात्य तरीके से बजाने की परम्परा आज जोरों पर है। आजकल के सुगम संगीत में हम तबले पर ही ओक्टो पैड़ के साथ पाश्चात्य तरीका सुन सकते हैं।

इसके अतिरिक्त आजकल सुगम-संगीत में फ्यूजन एवं बढ़ते प्रायोगिक प्रभाव के कारण धीरे-धीरे, पाश्चात्यकरण हो रहा है इसके साथ ही नए-नए पाश्चात्य वाद्यों का आविष्कार हो रहा है और धीरे-धीरे उनका प्रयोग सुगम-संगीत, उपशास्त्रीय संगीत एवं चित्रपट संगीत में होने लगा है।

संगीत, गायन में वाद्यों का विशेष महत्त्व है। रसाभिव्यक्ति के लिए संगीत को विशेष रूप से सजाने के लिए वाद्यों की आवश्यकता होती है। भारतीय सुगम-संगीत में वाद्यों का विशेष महत्त्व शुरू से ही है, भारतीय सुगम संगत में तत, अवनद्ध, घन और सुषिर चारों प्रकार के वाद्य उपयोग में लाए जाते रहे हैं। भारतीय संगीत परम्परा के अनुसार भारतीय सुगम संगीत में ताल के लिए तबला, ढोलक, पखावज, मृदंग, डेरू, ढफ, घड़ा, शहनाई, सितार, शंख, बांसुरी, जलतरंग, काष्ठतरंग, सारंगी आदि अन्य लोक वाद्यों का भी प्रयोग शुरू से होता रहा है। लेकिन वर्तमान समय में भारतीय सुगम संगीत का इन वाद्यों से अलगाव दिखाई देने लगा है। ताल और लय पक्ष के अतिरिक्त सुगम संगीत के वाद्य पक्ष पर भी बखूबी पाश्चात्य प्रभाव पड़ा है। तबले, ढोलक का स्थान पैड, चैंगों, कांगों और ड्रम ने ले लिया है तथा सितार, सारंगी, तानपुरा, वीणा आदि के स्थान पर वायलिन, हारमोनियम, बैंजों एवं गिटार बजते दिखाई देते हैं। ठीक उसी प्रकार बाँसुरी, शहनाई के स्थान पर मॉउथ ऑरगन, विसल, त्रिमपिट, सेक्सोफोन और कलारनेट बजने लगे है। अन्य वाद्यों के स्थान पर अकॉर्डिन, हारमोनियम, सिंथेसाईजर/कीबोर्ड आदि का प्रयोग अत्यधिक देखने को मिलता है।[5]

यहाँ पर कीबोर्ड/सिंथेसाइजर के बारे में एक बात और स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि सिंथेसाइजर एक ऐसा पाश्चात्य इलैक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्र है जिसमें बहुत से भारतीय एवं पाश्चात्य वाद्यों का इफैक्ट बनाकर प्रयोग में लाया जाता है। सैंकड़ों वाद्ययंत्रों का प्रयोग इस एक वाद्ययंत्र के द्वारा लिया जा सकता है। इस समय सिंथेसाइजर के द्वारा सिने-संगीत व सुगम संगीत की हर विधा गीत, भजन, ग़ज़ल, कव्वाली इत्यादि में इसका दशकों से प्रयोग हो रहा है। हॉरमोनियम जो कि एक पाश्चात्य वाद्य है इसका प्रयोग चित्रपटीय सुगम संगीत में देखने को मिल रहा है। यह वाद्य भारतीय सुगम संगीत फिल्मी संगीत, एवं उपशास्त्रीय संगीत में इस कदर रम गया है कि मानों ये वाद्य पाश्चात्य नहीं भारतीय हो।[6]

वर्तमान सुगम संगीत के गीत, भजन, ग़ज़ल आदि की बंदिश या बोलों पर भी पाश्चात्य प्रभाव देखने को मिलता है। कई बार तो गायन सुनकर ये पता ही नहीं चलता कि ये गीत, भजन, गीत है या रोमांटिक सॉन्ग, वर्तमान समय में दोहरे एवं कामुक अर्थों वाले बोल भी गाए जाने लगे है। जागरण गाए जाने वाले गानों में शब्द तो देवी-देवता को समर्पित होते हैं, लेकिन उनकी धुनें फिल्मी होती हैं। उन्हें सुनते समय फिल्मी गीतों के बोल हमारे मन-मस्तिष्क में प्रवाहित होने लगते हैं ना कि देवी-देवताओं को समर्पित गीत संगीत।

पहले सुगम संगीत के गायन पक्ष में डिजिटलाइजेशन का बोलबाला नहीं था। गाना केवल एक टेक में रिकॉर्ड किया जाता था। किन्तु वर्तमान सुगम संगीत में पूर्ण रूप से वैज्ञानिक प्रभाव देखने को मिलता है। ट्यूनर के द्वारा आवाज को सुर में किया जा सकता है। वर्तमान समय में वाद्य-वादक कलाकार अपनी सुविधानुसार किसी भी समय स्टूडियों में अपनी प्रस्तुति देकर चले जाते हैं। विभिन्न प्रकार के कंप्यूटर सॉफ्टवेयरों एवं मशीनीकरण के द्वारा ही हर प्रकार के वाद्य यंत्र बजा लिए जाते हैं। ये सब काम आजकल, नैवेन्डो, क्यूबेस आदि विभिन्न सॉफ्टवेयरों पर खूब किया जा रहा है। जो कि समय की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त शोध पत्र के सूक्ष्म विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि आधुनिक 21वीं सदी में संगीत ही नहीं वरन संस्कृति के हर एक पहलू पर पाश्चात्य प्रभाव बड़ी ही तेज गति से पड़ रहे हैं। संभवतः परिवर्तन संसार का नियम है किंतु परिवर्तन की परंपरा का औचित्य है सुगुणों को ग्रहण करते हुए दुर्गुणों को छोड़ना! आज सिनेमा, साहित्य, संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत आदि पर आधुनिकीकरण का प्रभाव देखने को मिला है विशेषकर सुगम संगीत के प्रस्तुतीकरण पर रिकॉर्डिंग के प्रभाव पड़ रहे हैं इन प्रभावों के फलस्वरूप इंसानी परवर्ती भाग-दौड़ में अत्यधिक परिवर्तन आया है।

रैप संस्कृति से समाज में नैतिक मूल्यों का दिन-प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है तथा अनेक प्रकार के नए-नए अपराध जन्म ले रहे हैं, यहाँ तक की हमारे संस्कार भी दिन-प्रतिदिन लुप्त हो रहे हैं व्यक्ति के खान-पान से लेकर पहनावा तथा बातचीत का अंदाज बदल रहा है हर चीज में व्यवसायीकरण नजर आ रहा है जो कि संस्कृति एवं संगीत के लिए ठीक नहीं है। परिवर्तन, अच्छे के लिए हो तो बहुत अच्छा है लेकिन यदि परिवर्तन से मूल परंपरा के तत्वों का नाश हो तो है परिवर्तन या प्रभाव व्यर्थ हो जाता है इन सब प्रभावों के अंतर्गत यह तो आने वाला समय ही तय करेगा कि सुगम संगीत पर यह पाश्चात्य प्रभाव कितने आवश्यक हैं और आने आने वाले युग के लिए ये कितने सकारात्मक या नकारात्मक सिद्ध होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग, 'संगीत' मासिक पत्रिका, जनवरी-1986, संगीत कार्यालय हाथरस, उ. प्र., पृ. 7
2. बसन्त, संगीत विशारद, (2000) संगीत कार्यालय, हाथरस उ. प्र., पृ. 857
3. हरिशचन्द्र श्रीवास्तव, संगीत निबन्ध संग्रह, संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद, उ. प्र., पृ. 68
4. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव, ताल परिचय, भाग 1, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद, उ. प्र., संस्करण 2004, पृ. 80
5. कपिल देव, सुगम संगीत की विभिन्न विधाओं पर पाश्चात्य प्रभाव, (अप्रकाशित शोध प्रबंध) संगीत विभाग, कु. वि. कु., पृ. 351
6. वही, पृ. 352